आज का पुरुषार्थ 21 August 2022

Source: BK Suraj bhai **Website**: www.shivbabas.org

धारणा – *"इस कलियुग के बूरे संस्कार और वायब्रेशन्स से बचना है तो .. अपने चारों ओर पावरफूल प्रभामण्डल का निर्माण करे "*

पवित्रता हमारी मूल नेचर है। बाबा ने कहा था कि →

" तुम यह सोचते हो कि हमें सम्पूर्ण पवित्र बनना है .. यह न सोचकर यह सोचो कि ...

' मैं परम पवित्र आत्मा हूँ '

... तो इससे पवित्रता के संस्कार जागृत हो जायेंगे।

" मैं पवित्रता का फ़रिश्ता हूँ .. पवित्रता मेरा स्वधर्म है .. पवित्रता मेरी मूल नेचर है "

... यह स्मृति बहुत ज्यादा बढ़ानी है।

समय बदल चुका है। कलियुग अब एकदम अंत आ गया है। चारों ओर वासनाओं का संस्कार, वायब्रेशन्स वातावरण में भी दिखाई दे रही है।

हर मनुष्य के संस्कार जग रहे है। इसलिए बहुत सावधान रहने की जरूरत है। ताकि इन कलियुग के बूरे संस्कारों का, बूरे **वायब्रेशन्स** का इफेक्ट हम पर न पड़े।

इसके लिए स्वयं के चारों ओर पावरफूल प्रभामण्डल निर्माण करके रखना है। और वह है सवेरे उठते ही **संकल्प करे** →

" मैं मास्टर सर्वशक्तिमान हूँ "

... सात बार यह याद करे। और विज़न बनाये ...

" मेरे चारों ओर शक्तियों के aura बन गया है .. और इस घेरे (aura) में इस प्रभामण्डल में .. मैं माया की किसी भी प्रभाव से vibration से मुक्त हूँ "

जो बहुत अच्छे पुरुषार्थी है, जो बहुत अच्छे योगी है, जिनकी प्योरीटी बहुत सुन्दर हो गई है .. उन्हें तो रोज ..

" पवित्र वायब्रेशन्स चारों ओर फैलानी चाहिए "

ताकि जो ब्राह्मण आत्मायें **पवित्रता** का मार्ग अपना चुकी है उन्हें भी इस मार्ग पर चलना सरल हो जाये।

और जो इस मार्ग पर चल रहे है उन्हें दृढ़ **प्रतिज्ञ** होना चाहिए। उन्हें internet, YouTube, WhatsApp, facebook आदि से स्वयं को बचाना चाहिए।

क्योंकि अगर वह भी देखते रहेंगे और **पवित्र** बनने की सोचते रहेंगे तो शायद सफलता दूर निकलती जायेंगी।

क्योंकि हमें मन को स्वच्छ करना है। स्वप्न को स्वच्छ करना है। Past की effects को समाप्त करना है। बहुत बड़ी चीज़ है।

" पाँच स्वरुपों का अभ्यास "

... उससे पवित्रता की गहरी छाप हमारी मानस पटोल पर पड़ जाती है।

और जो भी पुराना है, जो भी गंदगी किसी के पास रही है वह समाप्त हो जाती है।

यह अभ्यास बहुत ज्यादा करना है। अपनी देव स्वरुप को विशेष रूप से सामने रखना है। वैसे तो फ़रिश्ता रुप, पुज्य रुप सभी परम पवित्र है।

परन्तु यह विज़न भी हमें देखनी है कि →

" जब मैं परमधाम में हूँ .. तो मैं बाबा के बहुत समीप हूँ .. और मेरी ओरा मेरा चमक सब आत्माओं से ज्यादा है .. यह चमक, यह प्योरीटी की चमक है "

तो बहुत ही अच्छे संकल्प करेंगे कि →

" जिस मार्ग पर हम चल चुके है .. उसमें हमें सम्पन्न होना है "

" जब चल दिये विद एवरनेस .. पूरी स्मृति के साथ .. पूरे ज्ञान के साथ " ...

... सबकुछ जानने के बाद जब हम पवित्रता का मार्ग अपना लिया, तो हमें इसमें सम्पूर्ण होना ही है। इसका परम आनन्द, इसका परम सुख प्राप्त करना ही है।

तो निगेटिविटी से, इधर-उधर देखने से बचेंगे। विशेष रूप से आत्मिक दृष्टि का अभ्यास बहुत अच्छा करते रहेंगे। इससे देह के आकर्षण, देहधारियों के संकल्प समाप्त होगा।

तो ...

" मैं पवित्रता का फ़रिश्ता हूँ "

... साथ में अशरीरीपन और आत्मिक दृष्टि

इन सबका बहुत अभ्यास करने से **पवित्रता की स्थिति, पवित्रता की शक्ति दिनों दिन बढ़ती जायेगी।**

।। ओम शान्ति ।।

BK Google: www.bkgoogle.org

Website: www.shivbabas.org